# बाड़मेर जिले के पचपदरा तहसील में रिफाइनरी के निर्माण से आधारभूत संरचना एवं प्राकृतिक पर्यावरण पर प्रभाव : एक भौगोलिक अध्ययन

*डॉ. ललित सिंह झाला
**श्रीपाल

**शोध सारांश**

मनुष्य अपनी विभिन्न आवश्यकता एवं उद्देश्यों की पूर्ति एवं समस्याओं के समाधान हेतु प्राचीनकाल से प्राकृतिक स्त्रोतों पर निर्भर था। परन्तु कालान्तर में मानव के बौद्धिक क्षमता के विकास के साथ ही प्राकृतिक स्त्रोतों एवं संसाधनों के उपयोग में विविधता देखने को मिलती है। मानव प्राचीन सभ्यता से वर्तमान सभ्यता की और उन्मुख होते हुए प्राकृतिक संसाधनों को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में अपनी बौद्धिक क्षमता एवं तकनीकी के माध्यम से विभिन्न रूपों के उपयोग करना सीख लिया है। अतः आधुनिक मानव सभ्यता के साथ आधारभूत सुविधाओं का तकनीकी विकास एवं औद्योगिक विकास में निरंतर प्रयासरत है। इन आधारभूत सुविधाओं के विकास को एक बड़े पैमाने पर लाकर जिसके फलस्वरूप मानव के विकास में तीव्रता के साथ–साथ सामाजिक एवं आर्थिक विकास में भी तीव्रगति से प्रगति देखने को मिली है। इस क्षेत्र में पाई जाने वाली क्षेत्रीय असमानता एवं क्षेत्रीय सुविधाओं में पाई जाने वाले संतुलन को कम किया जा सकता है। इस क्षेत्र में रिफाइनरी के निर्माण से मध्यम एवं बड़े आकार के उद्योगों एवं आधारभूत सुविधाओं के साथ भारतीय लोगों की क्षमता को प्रोत्साहित एवं विकसित किया जा सकता है।

**अध्ययन क्षेत्र**

पचपदरा तहसील बाड़मेर जिले राजस्थान के उत्तर पूर्व भाग में स्थित है। बालोतरा उपखण्ड के उत्तर पूर्व भाग में कस्बा की भौगोलिक विस्तार 25°55′ उत्तरी अंक्षाशसे 72°16′ पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। इसके उत्तर में गाँव गोपड़ी, पूर्व में कुड़ी, दक्षिण पूर्व में भाडियावास,मूँगड़ा, दक्षिण में पिकुआ तथा उत्तर पश्चिम में पैट्रोकेमिकल्स रिफाइनरी का निर्माण कार्य जारी है। इसका भौगोलिक क्षेत्रफल 3483 वर्ग किलोमीटर है। जिसमें से ग्रामीण क्षेत्र 5453.69 वर्ग किलोमीटर व नगरीय क्षेत्रफल 29.01 वर्ग किमी. है। भारतीय जनगणना विभाग 2011 के अनुसार पचपदरा तहसील की कुल जनसख्या 4,22,784 है। जिसमें पुरूष 2,22,029 तथा महिला 2,02,755 है। इस तहसील की कुल जनसख्या में से ग्रामीण जनसख्या 3,48,288 है जिसमें पुरूष 1,81,314 तथा महिला 1,66,974 है। नगरीय क्षेत्रों की जनसंख्या 1,13,277 है जिसमें पुरूष 38781 तथा महिला 74,496 है। इस पचपदरा तहसील मे कुल 280 गाँव सम्मिलित है। इस कस्बे में एक खारे पानी की झील है जो नमक उत्पादन के लिए विश्व प्रसिद्ध है। इस गाँव के खारवाल जाति के लोग मोरली झाड़ी के उपयोग द्वारा नमक का उत्पादन होता है। इस झील का निर्माण 400 वर्ष पहले पंचा नामक भील द्वारा करवाया गया था। इसमें मुख्यतः नमक उत्पादन हीरागढ़ क्षेत्र से होता है। पचपदरा तहसील की समुद्रतल से औसत ऊँचाई 102 मीटर है यह बालोतरा से जोधपुर राष्ट्रीय महामार्ग 112 पर स्थित है।

### अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में पाई जाने वाली आधारभूत सुविधाओं के अंतर का स्थानिक विश्लेषण करते हुए उनका मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का आकलन करना है तथा उसके प्रभाव को कम करने के लिए उपयुक्त रणनीति प्रस्तुत करना।

### विधि तंत्र

प्रस्तुत शोध पत्र हेतु द्वितीयक आँकड़ो का उपयोग किया गया है। इनत तथ्यों को तहसील की विभिन्न जनगणना पुस्तिका बाड़मेर जिले का गजेटियर, जिला दर्शन, बालोतरा का मास्टर प्लान एवं सांख्यिकीय पत्रिकाओं आदि से प्राप्त किया जाता है इसके साथ ही साथ पुस्तुत शोध पत्र में व्यवस्थित अवलोकन को भी महत्वपूर्ण आधार बनाया गया है। जिससे यथास्थिति दृष्टिगत हो सके। आँकड़ो का विष्लेषण एवं मानचित्रण विभिन्न सांख्यिकीय विधियों द्वारा किया गया है।पचपदरा तहसील में निम्नलिखित आधारभूत सुविधाएँ पायी जाती है। जिसके आधार पर तहसील में स्थित गाँवों की आधारभूत संरचना के विकास स्तर का पता किया गया है।

### शिक्षा

बाड़मेर जिले की पचपदरा तहसील के गाँवों में शिक्षा का स्तर जिले की अन्य तहसीलों की तुलना में काफी कम है। तहसील में 2 सरकारी, 1 व्यवसायिक कॉलेज, 29 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, 5 माध्यमिक विद्यालय, 66 उच्च प्राथमिक विद्यालय तथा 122 राजीव गांधी पाठशाला है।

### चिकित्सा एवं स्वास्थ्य

तहसील में कुल 103 चिकित्सा संस्थाएँ है। जिसमें से एक राजकीय चिकित्सालय, 90 उप स्वास्थ्य केन्द्र, 10 प्राथमिक स्वास्थ्य एवं 2 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र है। सभी लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध करवाने के उदेष्य से चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा गतिविधियों क्रियान्वयन की जा रही है।

### परिवहन

परिवहन तंत्र को अर्थव्यवस्था की धमनी कहा जाता है। जिले में 2012–13 में पेटेंट रोड़ 678,78 किमी. है। इस तहसील में रेल परिवहन की सुविधा उपलब्ध नहीं है। लेकिन वर्तमान रिफाइनरी के निर्माणाधीन होने के कारण पक्की सड़कों का निर्माण सरकार द्वारा गतिविधियाँ एवं योजना प्रयासरत है।

### अन्य सुविधाएँ

इस क्षेत्र में बैंक बाजार, सहकारी समितियाँ, डाक, तार, विद्युत आदि सुविधाएँ विद्यमान है। लेकिन इन सुविधाओं का अधिक जमाव पचपदरा कस्बा एवं तहसील मुख्यालय तक ही सीमित है। आस–पास के ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी इन आधारभूत सुविधाओं से वंचित है।

### आधारभूत सुविधाओं के आधार पर विकास स्तर

एम.एन.पाल (1962) ने अपने अध्ययन ''भारत में विकास स्तर में क्षेत्रीय असमानता'' में विभिन्न विकास संकेतो को लेकर संयुक्त सूचकांक विधि का प्रयोग किया है। के.एल.शर्मा (1975) ने अपने अध्ययन ''राजस्थान स्थानिक असमानताओं में विभिन्न आर्थिक संकेतो का प्रयोग करते हुए संयुक्त सूचकांक विधि का प्रयोग किया गया है।

### व्यवसाय एवं आर्थिक क्रियाकलापों में जनसंख्या का वितरण

पचपदरा तहसील की कुल जनसंख्या 4,22,784 है। जिसमें ग्रामीण 3,48,288 एवं नगरीय 74,496 जनसंख्या है। इस अध्ययन क्षेत्र की ग्रामीण जनसंख्या अधिक होने के कारण लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है कुल जनसख्या का 2001 के अनुसार 65.8 प्रतिशत कृषि कार्य पर निर्भर थे, लेकिन वर्तमान में रिफाइनरी स्थित होने के कारण कृषि कार्य में संलग्न जनसंख्या में कमी दर्ज की गई है जो 2011 की जनसंख्या के अनुसार 48.03 प्रतिशत कृषि कार्य कर रहे है प्रतिशत घटने का मुख्य कारण पेट्रोकेमिकल्स उद्योग स्थापित होने के कारण कृषि भूमि, गैर कृषि भूमि में परिवर्तित हो गई है।

**वर्ष 2011 पचपदरा ग्राम की व्यवसाय के अनुसार जनसंख्या का वितरण**

| | काश्तकार | | खेती मजदूर | | परिवारिक उद्योग | | अन्य कार्य | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | पुरूष | स्त्री | पुरूष | स्त्री | पुरूष | स्त्री | पुरूष | स्त्री |
| ग्रामीण | 27982 | 16770 | 3935 | 1817 | 1484 | 685 | 29311 | 4176 |
| नगरीय | 193 | 77 | 118 | 17 | 477 | 144 | 17447 | 1356 |
| योग | 28175 | 16847 | 4053 | 1834 | 1961 | 829 | 46758 | 5532 |

स्त्रोत : जनसंख्या प्रतिवेदन 2011 बाडमेर

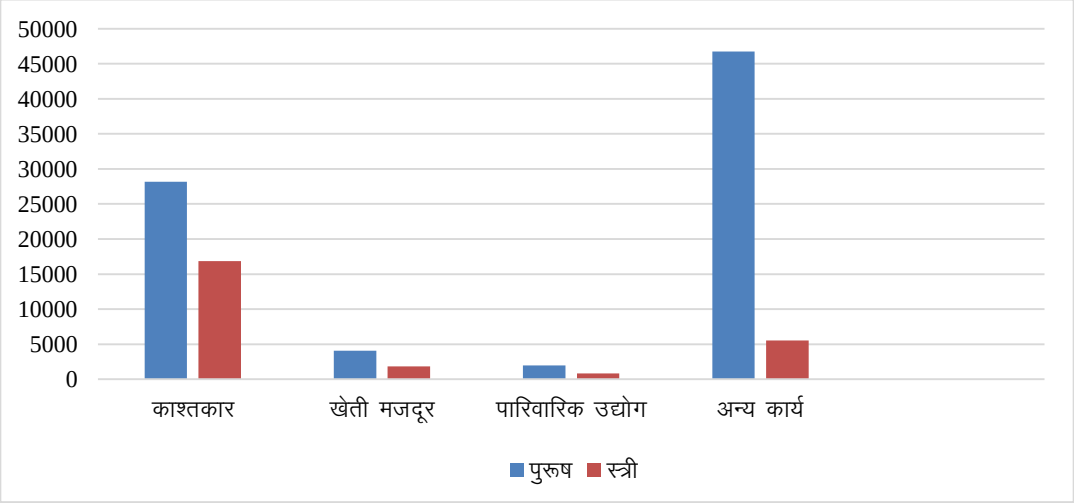

भूमि उपयोग का वर्गीकरण :–

सारणी – 2

| क्रम संख्या | | क्षेत्रफल (हैक्टे.) | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | स्थाई चारागाह तथा अन्य गोचर भूमि | 14381 | 13.56 |
| 2 | वृक्षों के झुण्ड तथा बाग | 647 | 0.61 |
| 3 | बंजर (कृषि योग्य भूमि) | 18554 | 17.49 |
| 4 | अन्य पड़त भूमि | 36885 | 34.78 |
| 5 | चलू पड़त भूमि | 35578 | 33.54 |
| योग | | 106045 | 100 |

स्त्रोत :– कार्यालय जिला कलक्टर (भू. उपयोग) 2016–17, बाड़मेर

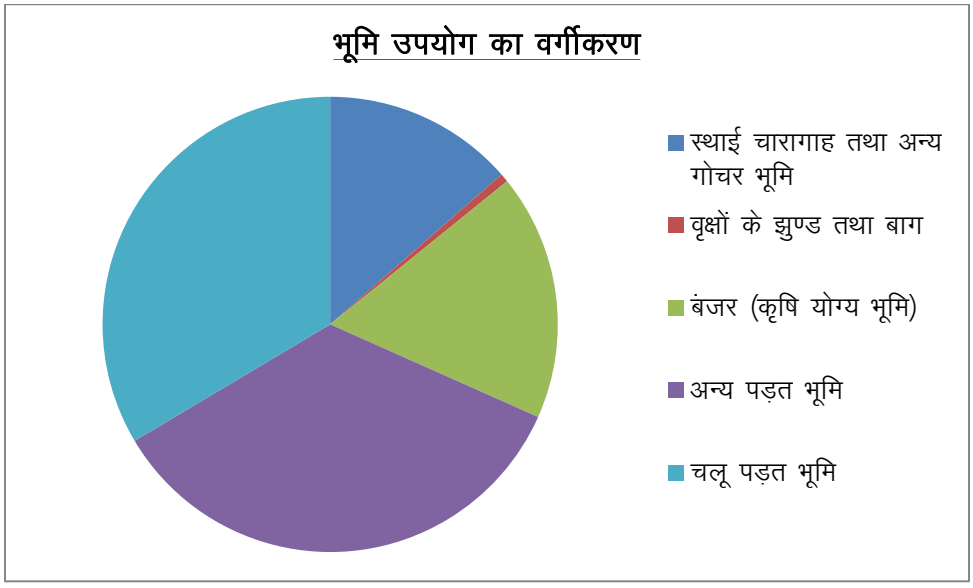

**समस्याएँ**

- इस उद्योग के विकास के कारण आवागमन व यातायात की समस्या।
- नगरीयकरण योग्य क्षेत्र का विकास अपेक्षाकृत अनियंत्रित एवं अनियोजित विकास।
- शहरों में गाँवों की अपेक्षा भूमि की किमते अधिक होना।
- कृषि भूमि का उपयोग समाप्त होना।
- कृषि योग्य भूमि क्षेत्रों का आकार निम्न होना।
- शहरी क्षेत्रों में अनियंत्रित आवासीय पट्टियों का निर्माण होना।
- गाँवों से शहरों की और लोगों का पलायन।
- शिक्षा का निम्न स्तर होने के कारण सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थानों की कमी है।

**सुझााव**

- अधिकांष लोगो द्वारा निजी वाहनों की अपेक्षा सार्वजनिक यातायात साधनों का प्रयोग किया जाए।
- शहरी क्षेत्रों में यातायात संकीर्णता की समस्या समाधान के लिए फ्लाईओवर का निर्माण किया जाए।
- शहर के क्षेत्र की सीमा के बाहर आवासों का निर्माण परिधि नियंत्रण पट्टी का प्रावधान करवाना।
- स्मार्ट विपेज योजना के तहत गाँवों का चयन कर शहर जैसी आधारभूत सुविधाएँ उपलब्ध करवाना।
- ग्रामीण स्तर पर शहरी क्षेत्रों की तरह रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाए जाए।
- शहर में आबादी भूमि का विस्तार प्रस्तावित भूमि पट्टी चिन्हित करना।
- शिक्षा स्वास्थ्य एवं बैंकिग के क्षेत्र में अत्यधिक कार्य करने की आवश्यकता है।
- इस क्षेत्र को पूर्वतः सुगम्य बनाने के लिए परिवहन तंत्र पर अत्यधिक कार्य करने की आवश्यकता है।
- अध्ययन क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

**निष्कर्ष**

किसी भी क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में जनसंख्या एवं आधारभूत संरचना का अपना विशिष्ट महत्व एवं स्थान है। जो किसी जनपद के विकास की आधारशिला है। आज भू–उपयोग एवं आधारभूत संरचना में पचपदरा में स्थित रिफाइनरी के निर्माण के दौरान चर्चा इसलिए आवश्यक है कि उद्योगों से पर्यावरण को अपार क्षति पँहुचती है वहीं पर लोगों के आर्थिक वृद्धि में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते है। अतः हमें उद्योग एवं अन्य आधारभूत

सुविधाओं का विकास इस प्रकार करना चाहिए जो प्राकृतिक पर्यावरण को कम नुकसान पहुँचायें और मानव आर्थिक विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करें।

***सहायक आचार्य**
****शोधार्थी**
**भूगोल विभाग,**
**जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)**

**References**

1. Pal, M.N. (1975). Regional disparities in the level of development in India, Indian Journal of regional science, Vol. VII, PP. 35-52
2. Sharma, K.L. (1975). Spatial disparities in Rajasthan. Indian Journal of Regional Science, Vol. VII, No. 1, PP. 88-98.
3. TYAGI, B.N. and Chaturvedi, B.K. (1983) : "Regional disparities – A measures and an explanation . IIRS. Vol. X V, No. 2, 1983, PP. 99-107
4. Roa, H. (1984). Regional Disparities and Development in India. Ashish Publishing House. New Delhi.
5. Bhallar, D.S. (1998). "Regional Economic Disparities and Area Planning in Rajasthan" ABD publication. Jaipur.
6. Mishra, R.N. (2002). Tribal life and Habital (Economy and Society) Ritus Publcation. Jaipur.
7. Mishar, R.N. (2011). Regional Diparties : A methodological Studies. IN: P.R. sharme etal. (eds.) Research methodology. Concept and studies. R.K. Books, New Books. New Delhi PP. 394-417.
8. Census of India. 2011.
9. Block Publication, (2016). Balotra Block District. Barmer.
10. Balotra Master Plan. (2011-2031).
11. www. Barmer. Rajasthan. Gov. in
12. जिला जनगणना प्रतिवेदन 2011, बाड़मेर।
13. कार्यालय जिला कलेक्टर (भू. उ.) 2016–17 बाड़मेर।